TEACHERS OF BIHAR
The Change Makers
Reg. No. BR/2025/0487469

पद्यपंकज

बिहार के शिक्षकों द्वारा रचित

फरवरी 2026 | अंक 18

वसंत विशेषांक

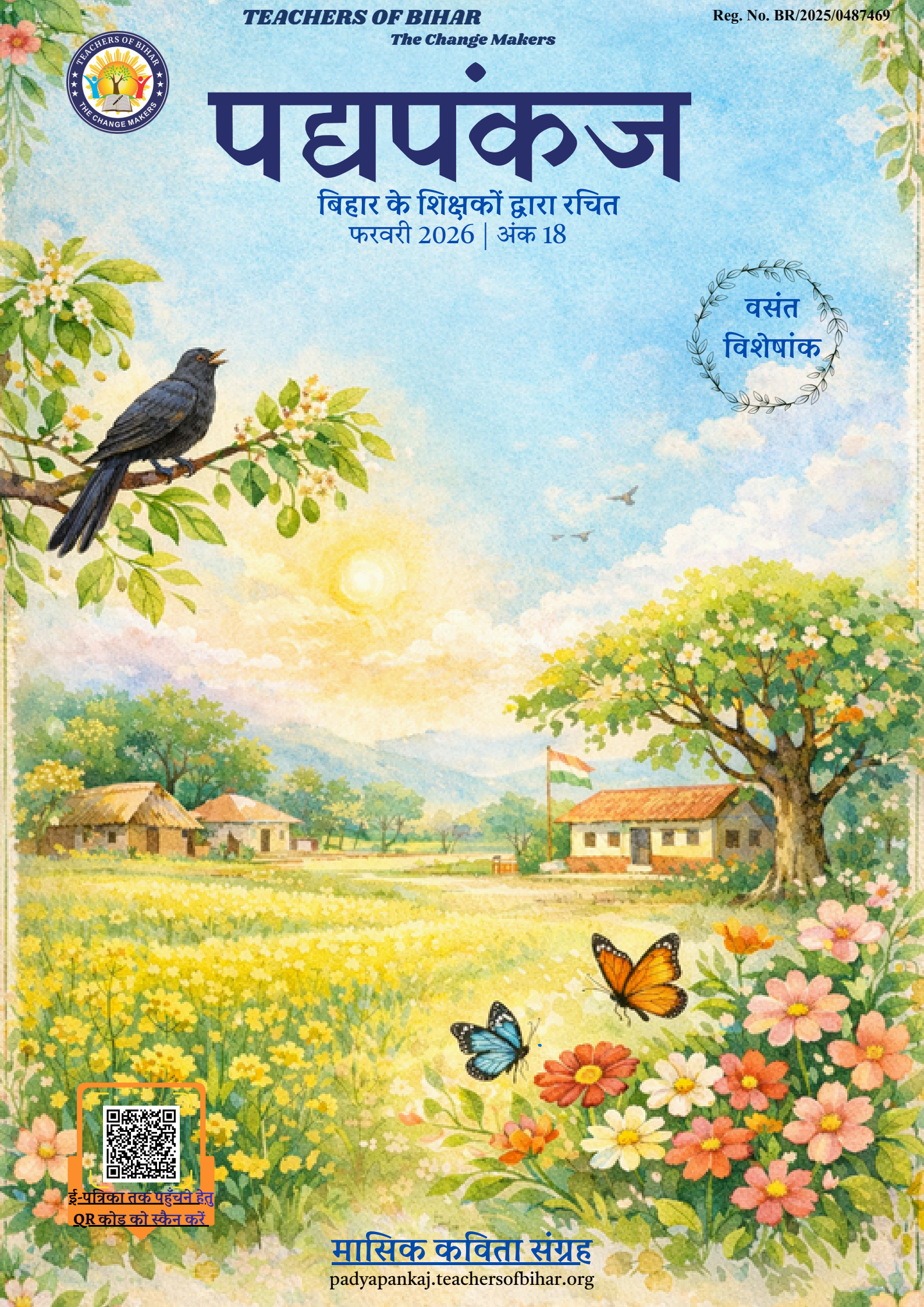

ई-पत्रिका तक पहुँचने हेतु QR कोड को स्कैन करें

मासिक कविता संग्रह

padyapankaj.teachersofbihar.org

शब्दों में वसंत

वसंत ऋतु प्रकृति का नवजीवन है। यह वह समय है जब धरती नए रंगों से सजती है, खेतों में सरसों लहराती है, पेड़ों पर नई कोपलें फूटती हैं और वातावरण में आशा, ऊर्जा तथा सृजन की सुगंध भर जाती है। इसी नवचेतना और सृजनात्मकता की भावना को समर्पित हमारी साहित्यिक पत्रिका "पद्यपंकज" का यह वसंत विशेषांक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है।

शिक्षक केवल ज्ञान देने वाला नही होता, बल्कि समाज में संवेदनाओं, संस्कारों और सृजनशीलता का संचार करने वाला मार्गदर्शक भी होता है। जब शिक्षक अपनी अनुभूतियों, विचारों और भावनाओं को शब्दों में ढालते हैं, तब साहित्य समाज को नई दिशा देता है। "पद्यपंकज" इसी रचनात्मक परंपरा का एक विनम्र प्रयास है, जहाँ बिहार के शिक्षक अपनी साहित्यिक प्रतिभा के माध्यम से प्रकृति, संस्कृति, समाज और मानवीय मूल्यों को अभिव्यक्त करते हैं।

वसंत हमें यह संदेश देता है कि परिवर्तन ही जीवन की सच्ची पहचान है। जैसे प्रकृति हर वर्ष नए रूप में खिलती है, वैसे ही शिक्षा और समाज भी निरंतर नवाचार, संवेदनशीलता और सकारात्मक सोच से आगे बढ़ते हैं। हमें विश्वास है कि इस अंक में प्रकाशित रचनाएँ पाठकों के मन में आनंद, प्रेरणा और चिंतन के नए द्वार खोलेंगी।

हम सभी रचनाकारों, शिक्षकों और सहयोगियों का हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं जिनके सहयोग से यह अंक संभव हो सका। आशा है कि "पद्यपंकज" का यह वसंत अंक पाठकों के हृदय में साहित्य के प्रति प्रेम और प्रकृति के प्रति संवेदना को और प्रगाढ़ करेगा।

सादर,
Teachers of Bihar

पद्यपंकज काव्य संग्रह

- पद्यपंकज मासिक पत्रिका जिसे टीचर्स ऑफ़ बिहार के तरफ़ से प्रकाशित किया जा रहा है। इस प्रकाशन में बिहार के शिक्षकों द्वारा स्वरचित कवितायें प्रकाशित हैं।
- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक का विक्रय नही किया जा सकता है। यह केवल पढ़ने के उद्देश्य से निःशुल्क उपलब्ध है।
- यह कविता 'Teachers of Bihar' की संपत्ति है। इसे किसी भी प्रकाशक या अन्य लेखक द्वारा उपयोग नही किया जा सकता है।
- पत्रिका के सभी लेख, चित्र और सामग्री के अधिकार लेखक और प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।
- पत्रिका के किसी भाग को बिना पूर्व अनुमति के पुनः प्रकाशित या वितरित नही किया जा सकता है।

प्रकाशन सहयोग

प्रधान संपादक

राम किशोर पाठक

प्रधान शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय कालीगंज

उत्तर टोला, बिहटा

संपादक एवं डिजाइन

अनुपमा प्रियदर्शिनी

रा० उ० मध्य विद्यालय, दूधहन,

रघुनाथपर, सिवान

तकनीकी सहयोग

ई ० शिवेंद्र प्रकाश

सुमन

नेतृत्वकर्ता

शिव कुमार

उत्क्रमित मध्य विद्यालय नारायणपुर,

बिक्रम, पटना

प्रधान संपादक की कलम से

ऋतु वसंत का आगमन, भरता है उल्लास।
जड़-चेतन नव रंग ले, बन जाते हैं खास।।

कुसुमाकर के संग में, आती नव उत्साह।
पाकर नवल उमंग को, गढ़ते नव-नव राह।।

मित्रों,
आप सबों को वसंत और मदनोत्सव की असीम शुभकामनाएँ।
वसंत ऋतु में प्रकृति नववधू के रूप में अपने शृंगार से नित्य ही हमारे मन को हरती रहती है और नये-नये भाव तथा कल्पनाओं का सृजन करते रहती है। ऐसे में काव्य कला से युक्त हमारे शिक्षक बंधुओं की कल्पनाएँ सिर्फ कक्षा-कक्ष तक कैसे सीमित रह सकती है!
फरवरी अंक के इस वसंत विशेषांक में विभिन्न भावों को अपने सरल शब्दों में कक्षा से लेकर समाज तक पहुँचाने के लिए हमारे शिक्षकों की लेखनी ने अपनी रचनाओं में इंद्रधनुषी रंग को इतनी सहजता से समाहित किया है कि पाठक वृंद प्रकृति के सानिध्य का उत्साह सतत आत्मसात करेंगे।
परीक्षाओं की जिम्मेदारी एवं नये सत्र की अगुआई में वसंत ऋतु ने सबका मनोबल बढ़ाने का प्रयास किया है।
वसंत सकारात्मकता, प्रेम, परिवर्तन और आनंद का प्रतीक है जिसे रचनाकार शिक्षकों ने छात्रों के उन्नयन के साथ-साथ समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए नवचेतना, प्रेम और आनंद के भाव के साथ नवपथ निर्माण की क्षमता का विकास करने का प्रयास किया है।
हमें पूर्ण विश्वास है कि यह अंक आप सुधि पाठकों में नव उत्साह और विचार भरकर आनंद के साथ विकास के पथ पर चलकर लक्ष्य प्राप्ति में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

सतरंगी मन कामना, गढ़े नवल नित राह।
प्रेमिल भाव वसंत का, हृदय जगे उत्साह।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय कालीगंज उत्तर
टोला, बिहटा, पटना, बिहार।

शुभकामना संदेश

"पद्यपंकज" जैसी पत्रिका शिक्षकों की उस रचनात्मकता और सोच को सामने लाती है, जो अक्सर उनके पाठ्यक्रम और जिम्मेदारियों के बीच छिपी रह जाती है। यह जानकर बहुत खुशी हुई कि हमारे शिक्षकगण, अपनी व्यस्त दिनचर्या के बीच भी साहित्य और लेखन के प्रति इतनी संवेदनशीलता और समर्पण दिखा रहे हैं।

यह पत्रिका सिर्फ शब्दों का संग्रह नही है, बल्कि यह एक जीवंत दस्तावेज़ है—जो शिक्षा, विचार और भावनाओं के मेल से बना है। इसमें छपी हर रचना, एक शिक्षक के अनुभव, उसकी सोच और समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारी को दर्शाती है।

"पद्यपंकज" की पूरी टीम, संपादक मंडल और इसमें सहयोग देने वाले सभी शिक्षकों को मेरी ढेरों शुभकामनाएँ। उम्मीद करती हूँ कि यह प्रयास यूँ ही आगे बढ़ता रहे और नई पीढ़ी को एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित करता रहे।

13/04/25

डॉ रश्मि प्रभा

संयुक्त निदेशक

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार

शुभकामना संदेश

“पद्यपंकज” जैसी रचनात्मक पहल यह सिद्ध करती है कि शिक्षक न केवल ज्ञान के दीप प्रज्वलित करते हैं, बल्कि समाज की सांस्कृतिक चेतना को भी जीवंत बनाए रखते हैं। यह पत्रिका उन भावनाओं, विचारों और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है, जो शिक्षकों के हृदय में पलती हैं और साहित्य के रूप में साकार होती हैं।

ऐसी पत्रिकाएँ शिक्षा को केवल पुस्तकों की परिधि में नही बाँधती, बल्कि सोच, अभिव्यक्ति और संवेदना को विस्तार देती हैं। यह प्रशंसनीय है कि हमारे शिक्षक अपनी व्यस्त दिनचर्या के साथ-साथ सृजनात्मक साहित्य के माध्यम से समाज को दिशा देने का कार्य कर रहे हैं।

मैं “पद्यपंकज” पत्रिका से जुड़े सभी शिक्षकों, संपादक मंडल और रचनाकारों को इस पुनीत कार्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। यह पत्रिका निरंतर पल्लवित और पुष्पित होती रहे, यही मेरी कामना है।

डॉ स्नेहाशीष दास

विभागाध्यक्ष,

विद्यालयी शिक्षा विभाग

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार

अनुक्रमणिका

क्रमांक	रचना का शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1	उड़ी बासंती खुशबू	आशीष अंबर	8
2	वसंत का आगमन	जैनेंद्र प्रसाद रवि	9
3	फाग में महका है हर अंग	राम किशोर पाठक	10
4	वसंत की बहार	मुन्नी कुमारी	11
5	ऋतुराज के आगमन पर	बिकास कुमार साव	12
6	फागुन	रामकिशोर पाठक	13
7	ऋतुराज वसंत	ब्यूटी कुमारी	14
8	वसंत	डॉ० अजय कुमार मीत	15
9	कहे ऋतुराज अपनों से	एस के पूनम	16
10	देखो वसंत है	डॉ स्नेहलता द्विवेदी आर्या	17
11	मन मेरा है मतवाला	राम किशोर पाठक	18
12	होली	डॉ स्नेहलता द्विवेदी आर्या	19
13	होली आयी	ब्यूटी कुमारी	20
14	देखो आयी होली	श्री रवि कुमार जी	21

उड़ी वासंती खुशबू

पीत वसन ओढ़े धरा, अंबर दिखता लाल ,
टेसू सरसों खिल गए , मौसम बदले चाल।

तन चढ़ता आनंद है, मन वासंती रूप,
खेतों में सरसों खिली, पीली लगती धूप।

बर्फ पड़े जब लॉन में, सर्दी लगती खूब ,
तन गरमा लें धूप में, छोड़ उदासी ऊब।

धूप उतरती जब धरा, मुस्काते हैं फूल ,
बाग – बगीचे मधुप ही, सुंदरता के मूल।

शीत हवाएँ जब चली, बचपन आया पास,
दूर हुए शिकवे गिले, दिल में जागी आस।

कुसुमों से खुशबू उड़ी, महक उठी है साँझ,
मधुकर को ज्यों मिल गई, मधुबन की सौगात।

फूलों के सौन्दर्य से , मधुकर करता प्यार ,
चाहत रंगत मीत से, चलता है संसार।

छुपता रवि जब व्योम में, चंदा ओढ़े शाल,
धरती पर कुहरा घिरे, तारे भी बदहाल।

वासंती खिलता चमन, कानन खुशबू वास,
तितली मधुकर फूल से, मधुबन बनता खास

आशीष अम्बर
उत्क्रमित मध्य विद्यालय धनुषी
प्रखंड – केवटी,जिला – दरभंगा

बसंत का आगमन

खेतों में हरियाली शोभें सरसों-अलसी बलखाती है।
ऋतुराज के स्वागत में कोयल गीत खुशी से गाती है।

नव पल्लव पा मधुबन हँसता कलियाँ खिलती हैं धीरे,
हरे दूब पर बिछें हैं मोती जैसे लगते हैं हीरे।
आतुर है बसंत आने को प्रकृति भी हर्षाती है।।

निर्मल हो गए ताल-तलैया शान्त हुई जलधारा है,
चाँदी जैसा बिछा सिकता चमकता स्वच्छ किनारा है।
धूप सेंकने तट पर मीनें आने से घबराती हैं।।

अच्छी लगती सर्द हवाएँ धीरे से जो तन को छूती,
बिल में दुबका का घना कुहासा जिसकी बोलती थी तूती।
मौसम बदला जाड़ा भागा धूप नही अब भाती है।।

भाँति-भाँति के फूल खिले हैं वन-उपवन और बागों में।
आसमान में चिड़ियाँ उड़ती घुंघरू बाँधे पागों में।
हरदम आगे बढ़ने को आपस में होड़ मचाती हैं।।

बसंत ब्यार पर हो सवार आई रंगों की होली,
यौवन मद में सराबोर हो झूमते युवकों की टोली।
आज मधुप को देख मिलन से तितली भी शर्माती है।
ऋतुराज के स्वागत में कोयल गीत खुशी से गाती है।।

जैनेन्द्र प्रसाद 'रवि'

फाग में महका है हर अंग

खिली जो कलियाँ ले नव रंग।
फाग में महका है हर अंग।।

देख कर फूलों का शृंगार।
भ्रमर ने छेड़ा कोई तार।।
प्रीत है गाता उसका गान।
सुनी तो कलियाँ हैं हलकान।।
मचल कर बोली मत कर तंग।
फाग में महका है हर अंग।।०१।।

आम की डलियों में है बौर।
महक से मिलता मन को ठौर।।
सुनाती कोयल है संगीत।
कूक में भरकर अपने प्रीत।।
निगोड़ी दिल है मेरा दंग।
फाग में महका है हर अंग।।०२।।

जंग करता है सारा अंग।
अभी है बदला मेरा ढंग।।
नैन है मेरे अब बेचैन।
नींद भी खोई सारी रैन।।
नशे में जैसे पीकर भंग।
फाग में महका है हर अंग।।०३।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय कालीगंज उत्तर टोला, बिहटा, पटना, बिहार।

बसंत की बहार

बसंत की बहार है,
वर्षा की फुहार है।
रंगों का त्योहार है,
आया खुशियों का बौछार है।

सूरज की किरणे सारी,
कोयल की कूक प्यारी।
भँवरे की राग न्यारी,
गीतो की सूर प्यारी।

रंग-बिरंगे फूलो ने ली अंगड़ाई,
पीली- पीली सरसों छाई।
आम की मंजरी निकलकर आई,
ऋतु बंसत की मान बढ़ाई।

सूनी डाली पर आई हरियाली,
चिड़िया चहके डाली- डाली।
प्रसन्नता की शोभा निराली,
ये मौसम कैसी मस्ती वाली।

खेतो में हरे-भरे फसले लहराएँ।
फूलों पर भौंरे मंडराएँ,
चलो हम सब मिलकर बसंत मनाएँ,
नाचे गाएँ खुशी मनाएँ।

मुन्नी कुमारी
प्राथमिक विद्यालय मोहनपुर मुशहरी
प्रखण्ड- झंझारपुर, मधुबनी

ऋतुराज के आगमन पर

निकल उठी हैं दिवा-रश्मियां
नव प्रभात, नव यौवन मन छाया है,
स्वागत के लिए कूक रही है कोकिला
क्रोड से निकल, विहगों ने स्वागत गीत गाया है।
वृक्षों की डालियां झूम कर कह रही हैं-
आओ ऋतुराज आओ।
पुष्प धरा पर बिछ चुके हैं स्वागत में
आओ यहां आसान जमाओ।

अपने कंत के आगमन को बिछाए पलकें
सृष्टि ने, यह कैसा प्रेम-व्यापार किया है!
वसंत दूती के संदेश से पुलकित
इला ने फिर श्रृंगार किया है।

प्रथम मिलन की मीठी उमंग में
मदन की मेदनी पुलक रही है।
अप्रतिम सौंदर्य की आभा में इला
दुल्हन जैसी दमक रही है।
वंदनवारों से सजी ये धरती
मिला जीवन को अब मोल यहां
स्वर्ग आ उतरा है धरा पर
जो कुसुमाकर आए यहां।

इस मीठी उमंग में नाच रहे
कलियों के संग-संग भंवरे
सुप्त इच्छाओं के खुले कपाट
प्रिय सानिध्य में सपने संवरे
कोंपल निकाल उठे तरुओं के
नव प्रभा में; नवजीवन मुस्काया है
स्निग्ध स्पर्श से खिल उठा यौवन
क्लांत हृदय ने नवरत्न पाया है।

रंग-बिरंगी कुसुम कलियों ने
जी-भर उल्लास मनाया है
राधिका के प्रेम में मोहन
कानन में रास रचाया है।
वेदना में जब डूबी सृष्टि
जीवन को तब वेद मिला
छूटा जब सानिध्य श्याम का
प्रेम का सारा भेद खुला।

इसी विरह की वेदना में
सृष्टि ने उर का संधान किया है।
प्रिय ऋतुराज के आगमन पर
कोकिल प्रिया ने यशोगान किया है।

विकास कुमार साव
प्राथमिक विद्यालय चान्दोडीह बेलहर
बांका

फागुन

अन्न भरा खेतों में, मन को भाया है।

हलचल अब रेतों में, फागुन आया है।।

सरसों पीली फूले, मस्ती से झूमे।

पाकर खिलती कलियाँ, भौरों ने चूमे।।

मादक हुई हवाएँ, तन हर्षाया है।

हलचल अब रेतों में, फागुन आया है।।०१।।

चंपा और चमेली, गेंदा सह बेली।

लिपट मकरंद सबसे, करती अठखेली।।

अब भ्रमर कुमुदिनी से, नेह लगाया है।

हलचल अब रेतों में, फागुन आया है।।०२।।

लाज छोड़ गुजरिया, दृग तीर चलाए।

चंचल शोख डगरिया, अब डँसती जाए।।

नैना कुछ मतवाली, हमें सताया है।

हलचल अब रेतों में, फागुन आया है।।०३।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय कालीगंज उत्तर टोला, बिहटा, पटना, बिहार।

ऋतुराज बसंत

मनहर लगता दृश्य धारा,
उपवन-उपवन खिले सुमन,
धरा पर सरसों की पीली चुनरी,
केसरिया खिला टेसू फूल,
तरु पर लगा नव पल्लव,
आ गया ऋतुराज बसंत।

बहे मंद- मंद समीर,
मौसम लगता है सुहावन,
अवनी धरण की नवयौवन,
होली का त्योहार निराला,
जीवन में भरता नवरंग,
आ गया ऋतुराज बसंत।

रंग बिरंगी उड़ी तितलियां,
अली के गुंजन का कौतूहल,
आम्र तरु में आया बौर,
कोयल गाती मीठे स्वर,
आ गया ऋतुराज बसंत।

बूटी कुमारी
प्राथमिक विद्यालय दलसिंहसराय,
समस्तीपुर

बसंत

आम के पेड़ पर छाए बौड़
चर- अचर नाचें चहूँ ओर
सुरभित भए दिग- दिगंत
सखि, यही तो है बसंत!
रे अलि! आया बसंत!

सिसिर का सुनापन है भागा
वन उपवन में जीवन जागा
फाग राग गाने लगे संत
सखि,यही तो है बसंत!
रे अलि! आया बसंत!

गेंदा,डालिया धरती चूमी
महुआ महका,सरसों झूमी
दसों दिशाएं हुई जीवंत
सखि, यही तो है बसंत!
रे अलि! आया बसंत!

जीवंतता का जारी रहे नर्तन
न हो सुमधुर भावों का अंत
मन बसें रहें सदा कंत
सखि, यही तो है बसंत!
रे अलि! आया बसंत!

डॉ० अजय कुमार
उत्क्रमित मध्य विद्यालय चाँपी कोढ़ा,
कटिहार (बिहार)

कहे ऋतुराज अपनों से

प्रभंजन आज चंचल है,
विदाई सर्द की करते।

अभी तो शुष्क धीरे से,
तुषारापात को हरते।

वसंती वात चलने से,
प्रकृति के द्वार खुल जाते।

भ्रमर जब गुनगुनाते हैं,
हजारों गीत वे गाते।

(2)

गई है रंग अब वसुधा,
हुई जगमग हरेपन से।

कहे ऋतुराज अपनों से,
डरो मत प्रिय सुनेपन से।

बुआई की किसानों ने,
प्रकंपित गाछ बरसों से।

गई है बढ़ लताएँ भी,
बिखरना गंध सरसों से।

(3)

चटकती कोंपलें कोमल,
जगाए प्रेम मानस में।

सुरभि अनुराग से रंगा,
सरस आनंद आपस में।

सखी यह, स्पर्श पुरवाई,
निमंत्रण नेह का पाई।

खुले कुंतल करे स्वागत,
भला क्यों आज शरमाई?

(4)

मिले पिकबंधु के नीचे,
मनोहर पल मृदुल छाया।

धरा श्रृंगार करती जब,
अनूठे रंग को लाया।

विटप पर है छिपी कोयल,
कुहू उसकी मधुर बोली।

रसिक खेले गुलालों से,
यही मधुमास की होली।

एस.के.पूनम
सेवानिवृत्त शिक्षक, फुलवारी शरीफ, पटना

देखो बसंत है

देखो बसंत आया मीठी मीठी ठंड है,
फाग धुन गा रहा क्यों देखो मकरंद हैं।
हवा बासंती यह लाई अब सुगंध है,
मन के मयूर देख नाचे अनंत हैं।

चुनरी रंगीन देख हो गये मतंग हैं
बहुरंगी पुष्प देख हर्षित अंग अंग हैं।
बैठी कुछ आस लिए मन में उमंग है,
भौरा संगीत गाये झूमे, लागे भंग है।

लोग सब गीत गावे, प्रेम है उमंग है,
रंग ले गुलाल धावे, दर्पण रंग-रंग है।
मैं भी सोचूँ कैसी बैठूँ जब ना कोई संग है,
काहे बसंत आये कैसा फाग रंग है।

आँगन अब कान्हा आयो बातें बेढंग है,
रास फास हैं चलावे वो तो श्रीचंद हैं।
ना कर कान्हा बलजोरी , मन देखो तंग है,
देखो बसंत धुनि, सब ओर आनंद है।

डॉ. स्नेहलता द्विवेदी 'आर्या'
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय
शरीफगंज कटिहार

मन मेरा है मतवाला

मन मेरा है मतवाला।
फागुन ने जादू डाला।।
दुनिया लगती रंगीली।
करती हर-पल अठखेली।।

तरुवर पर झूलें झूला।
खेतों में सरसों फूला।।
उपवन फूलों से महका।
यौवन तन में है बहका।।

गाते हैं सब मिलकर होली।
मिलते ही साथी टोली।।
मधुरिम है सबकी बोली।
मन भाए अब हमजोली।।

मिलते ही गोरा मुखड़ा।
भूला देते हैं दुखड़ा।।
फिर रंगों से हम पोते।
उड़ जाते उसके तोते।।

फगुआ गाकर बहलाते।
दिल की बातें बतलाते।।
हम-सब यूँ हँसते गाते।
मस्ती में रमते जाते।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय कालीगंज उत्तर टोला, बिहटा, पटना, बिहार।

होली

सारे शिकवे गिले एकदम छोड़ दें।
आज होली के रंग में शहद ऊघोल दे ,
इक पिचकारी लें तन व मन बोर दे।

आज होली के रंग में शहद घोल दे ,
इक पिचकारी लें तन व मन बोर दे।

दर्द के राह के भी सपन छोड़ दें,
कल नही आज हम, आज हम छोड़ दे।
प्रेम इस अंग दे, प्रेम उस अंग लें,
आज होली में हम अंतरंग रंग दे।

आज होली के रंग में शहद घोल दे ,
इक पिचकारी लें तन व मन बोर दे।

होली ऐसी मने न रहे कोई ग़म,
रंग से रंग देना है तन मन बदन।
हर गली में चले है जो कान्हा किशन ,
इनकी पिचकारी, में प्रेम रंग घोल दें।

आज होली के रंग में शहद घोल दे ,
इक पिचकारी लें तन व मन बोर दे।

इस अवध में सियाराम खेलें होली,
बरसाना बनी हैं नगर की गली ।
कान्हा को मोर संग भंग अंग जोड़ दे,
गंगा यमुना सा पावन ये मन जोड़ दें।

आज होली के रंग में शहद घोल दे,
इक पिचकारी लें तन व मन बोर दे।

डॉ. स्नेहलता द्विवेदी 'आर्या'
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय
शरीफगंज कटिहार

होली आई

होली आई होली आई,
खुशियों की सौगात लाई।
रंगों की बौछार लाई,
सबको हमने गुलाल लगाई।
पूआ और मिठाई खाई,
होली आई होली आई,
खुशियों की सौगात लाई।
मिलकर हमने फाग गाई,
ढोलक और मजीरा लाई।
सबके मन उमंग भर आई,
हम सबने गुलाल उड़ाई।
होली आई होली आई,
खुशियों की सौगात लाई।
जीवन में नवरंग भर आई,
होली बसंत के संग आई।
गली- गली बाजे शहनाई,
कोयल मीठी तान सुनाई।
होली आई होली आई,
खुशियों की सौगात लाई।
पिचकारी भर रंग उड़ाई,
सबको हमने गले लगाई।
भेदभाव को दूर भगाई,
हम सब हैं भाई- भाई।
अवध में होली खेले रघुराई,
हम सबने होलिका जलाई।
होली आई होली आई,
खुशियों की सौगात लाई।

बूटी कुमारी
प्राथमिक विद्यालय दलसिंहसराय,
समस्तीपुर

देखो आयी होली

रंगों से हुई आँख मिचोली, देखो आयी होली-आयी होली।
बच्चों बूढ़ो की निकली टोली, देखो आयी होली-आयी होली ।।

प्यार भरा ये त्योहार, बना देता आपसी व्यवहार।
मिलती सबसे खुशियाँ हैं आपार, नही रह जाता मतभेद भरा विचार ।।

जब आती होलिका दहन की बारी, तब सभी मिल करते इसकी विशेष तैयारी।
जलते होलिका का है एक ही प्रतिक, हमेशा बुराई पर होती अच्छाई की जीत ।।

हर घरों में बनते उस दिन मिठे पकवान।
खुब मजे से करते सारे व्यंजनों का नेवान ।।

फिर आती है होली खेलने की बारी।
सभी रंग गुलाल लगाने की करते तैयारी ।।

सबसे प्यारा सबसे न्यारा है, ये त्योहार हमारा।
न रहता किसी से सिकवा, निभातें दिल से भाईचारा ।।

पहनकर नए कपड़े, लेकर ग़ुलाल जब सब मिलते।
स्नहे, आशीर्वाद पा कर सबसे, खुद को प्रिय हम समझतें ।।

रंगों से हुई आँख मिचोली, देखो आयी होली-आयहोली।
बच्चों बूढ़ो की निकली टोली, देखो आयी होली-आयी होली ।।

श्री रवि कुमार जी
विद्यालय – कन्या उ० म० वि०, मसाढ़
(उदवंतनगर, भोजपुर)

पद्यपंकज

आपके द्वारा दिया गया अमूल्य समय हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि आपके पास कोई सुझाव हो, तो कृपया हमें अवगत कराएं, जिससे हम और भी बेहतर कार्य कर सकें।

Teachers Of Bihar

क्या आप बिहार के सरकारी विद्यालय के शिक्षक हैं ? आपको अपनी रचना भी प्रकाशित करनी है ? नीचे दिए गए वेबसाइट, ईमेल एवं व्हाट्सप्प के माध्यम से जुड़े |

writers.teachersofbihar@gmail.com

padyapankaj.teachersofbihar.org

+91 7250818080 | +91 9650233010

Reg. No. BR/2025/0487469

पद्यपंकज के सभी अंकों को पढ़ने के लिए QR Code को स्कैन करें